Sociology Study: Status and Role (प्रस्थिति एवं भूमिका)

Date: February 17, 2026

Author: Dr. Sangeeta Prakash

परिचय (Introduction)

सामाजिक संरचना में प्रत्येक व्यक्ति का एक विशेष स्थान होता है और उस स्थान से जुड़ी कुछ अपेक्षाएं होती हैं। इन्हीं को समाजशास्त्र में 'प्रस्थिति' और 'भूमिका' के नाम से जाना जाता है। ये दोनों अवधारणाएं सामाजिक व्यवस्था को समझने के लिए अनिवार्य हैं क्योंकि ये व्यक्ति की सामाजिक पहचान और उसके कार्यों को निर्धारित करती हैं।

I. प्रस्थिति (Status)

प्रस्थिति का अर्थ (Meaning of Status)

प्रस्थिति से तात्पर्य समाज में व्यक्ति को प्राप्त उस निश्चित स्थान, पद या स्थिति से है, जिसके आधार पर उसकी सामाजिक पहचान होती है। प्रत्येक व्यक्ति समाज में किसी न किसी प्रस्थिति से जुड़ा होता है। यह प्रस्थिति जन्म से भी मिल सकती है (जैसे जाति या लिंग) तथा व्यक्तिगत प्रयासों से भी प्राप्त की जा सकती है (जैसे डॉक्टर या शिक्षक)।

समाज में व्यक्ति केवल एक ही प्रस्थिति नहीं रखता, बल्कि एक साथ अनेक प्रस्थितियाँ धारण करता है, जिसे 'प्रस्थिति-संकुल' (Status-set) कहा जाता है।

प्रमुख परिभाषाएँ (Major Definitions)

- इलियट एवं मेरिल **(Elliott and Merrill)** के अनुसार: "प्रस्थिति वह स्थान है जिसे व्यक्ति अपने लिंग, आयु, परिवार, वर्ग, व्यवसाय, विवाह एवं उपलब्धियों के आधार पर सामाजिक समूह में प्राप्त करता है।"
- राल्फ लिंटन **(Ralph Linton)** के अनुसार: "सामाजिक संरचना में व्यक्ति अथवा समूह द्वारा प्राप्त पद को प्रस्थिति कहते हैं।"

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि प्रस्थिति समाज द्वारा प्रदान किया गया एक सामाजिक पद है, जो व्यक्ति के अधिकारों, कर्तव्यों एवं प्रतिष्ठा को निर्धारित करता है।

II. भूमिका (Role)

भूमिका का अर्थ (Meaning of Role)

भूमिका से अभिप्राय उन व्यवहारों, कार्यों और उत्तरदायित्वों से है, जिनकी समाज व्यक्ति से उसकी प्रस्थिति के आधार पर अपेक्षा करता है। सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि प्रस्थिति व्यक्ति का 'स्थान' है, जबकि भूमिका उस स्थान का 'व्यवहारिक रूप' है।

प्रत्येक प्रस्थिति के साथ एक निश्चित भूमिका जुड़ी होती है। जब व्यक्ति सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरूप व्यवहार करता है, तब वह अपनी भूमिका का निर्वाह करता है। सामाजिक व्यवस्था का संतुलन उचित भूमिका-निर्वाह पर ही

निर्भर करता है।

प्रमुख परिभाषाएँ (Major Definitions)

- सार्जेंट (**Sargent**) के अनुसार: "किसी व्यक्ति की भूमिका सामाजिक व्यवहार का वह प्रतिमान है जो समूह की अपेक्षाओं के अनुरूप होता है।"
- जे. ए. फिक्टर (**J. A. Fichter**) के अनुसार: "जब अनेक परस्पर सम्बद्ध व्यवहार किसी सामाजिक कार्य के लिए संगठित हो जाते हैं, तो उसे भूमिका कहा जाता है।"

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि भूमिका सामाजिक अपेक्षाओं पर आधारित व्यवहारों का संगठित रूप है।

III. संक्षिप्त निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्थिति समाज में व्यक्ति का स्थान है तथा भूमिका उस स्थान से संबंधित अपेक्षित व्यवहार। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं; प्रस्थिति बिना भूमिका के अर्थहीन है और भूमिका बिना प्रस्थिति के संभव नहीं है। सामाजिक व्यवस्था की स्थिरता और गतिशीलता इन्हीं दोनों के बीच पाए जाने वाले संतुलन पर आधारित होती है।